जननी जन्मभूमि

संकलित

विचार-बोध :

यह निबंध हमारी जन्मभूमि ओड़िशा (उत्कल, कलिंग, कोशल आदि) के बारे में काफी जानकारी देता है । कलिंग के लोग बड़े बीर और साहसी होते थे । कलिंग की सेना ने सम्राट अशोक की सेना के साथ मुकाबला किया । बहुत लोग मारे गए । मध्यकाल में ओड़िशा के गजपति राजाओं ने गंगा से गोदावरी तक अपना राज्य फैलाया था । आज वह गौरव अतीत में डूब गया है । उत्कल भूमि मंदिर मूर्त्तियाँ बनाने की कला में मशहूर थी । यहाँ की चित्रकला तथा अन्य शिल्प कला देश-विदेश में प्रख्यात थी ।

आड़िशा का वर्त्तमान फिरसे उत्साहजनक हुआ । स्वतंत्रता के बाद यहाँ अनेक छोटे बड़े उद्योग तथा कारखानें स्थापित हुए । कई बंदरगाहों की स्थापना हुई है । यह प्रांत आज प्रगति के पथ पर चल रहा है ।

जननी जन्मभूमि

यह दुनिया बड़ी अजीब है । क्या-क्या नहीं है इसमें । बड़े-बड़े पहाड़ हैं । घने जंगल हैं । कलकल करती नदियाँ बहती हैं । झरने झरते हैं । सागर गरजते हैं । किस्म-किस्म के पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नर-नारी हैं । भला है तो बुरा भी है । तुलसीदास कहते हैं – ‘जड़ चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार ।’ यहाँ जड़-चेतन, चर-अचर सब हैं । यह विविधता का भंडार है । अच्छे लोग अच्छाई को चुनते हैं, जैसे हंस दूध पी लेता है, और पानी छोड़ देता है ।

संसार हर पल बदलता भी रहता है । ऋतुएँ बदलती हैं । मौसम कभी सुहावना होता है तो कभी डरावना । कभी जानलेवा गर्मी तो कभी कड़ाके की सर्दी । जहाँ हरीभरी फसल नाचती है, वहाँ अकाल भी पड़ता है । आदमी कभी सुख-चैन से जीता है तो कभी दु:खी होता है । कहीं अमीरी है तो कहीं गरीबी । अच्छे दिन जल्दी उड़ जाते हैं । बुरे दिन हौले-हौले सरकते हैं । लोग कहते हैं यह जिंदगी भी क्या है ? चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात।

यह मनुष्य भी अजीब प्राणी है । वह अँधेरी रात से डरता नहीं, लड़ता है । वह हर दु:ख को झेलता है, हर दर्द को सहता है । चार दिन की चाँदनी की तलाश में उन चंद दिनों के सुख के लिए, प्रकृति से भी लड़ता है । उस पर कब्जा जमाना चाहता है । क्योंकि आशा से ही आकाश थमा है । मनुष्य की यह अदम्य जिज्ञाषा नया-नया इतिहास रचती है । यह उसके उत्थान और पतन की कहानी है ।

इसलिए हर आदमी का हर समाज का, हर देश या प्रदेश का अलग इतिहास होता है । उसमें उसकी आशा-आकांक्षा, खुशी-गम का, सफलता-विफलता का, आलस्य और चौकसी का लेखाजोखा रहता है ? आइए, अपनी जन्मभूमि ओड़िशा के इतिहास के एक-दो पन्ने पढ़ें ।

ओड्र देश या ओड़िशा के कई नाम मिलते हैं । कलिंग, उत्कल, कंगोद और कोशल । एक-एक नाम शायद किसी अंचल या काल में ज्यादा प्रिय हुए हैं ।

इस इतिहास का पहला पन्ना है ईस्वी पूर्व तीसरी शताब्दी का । लिखा है – कलिंगा: साहसिका: । क्योंकि कलिंग के सैनिकों ने विशाल मगध-सेना के दाँत खट्टे कर दिए । सम्राट अशोक का डटकर मुकाबला किया । जानें दीं, जमीन नहीं दी । लाख की तादाद में मरे, लाख बन्दी बने । दया नामकी नदी में रक्त की धारा बह चली । न राजा का नाम पता है, न सेनापति का । लेकिन प्रचण्ड अशोक भी घबरा गया । वह धर्माशोक बन गया । युद्ध छोड़ दिया । तलवार फेंक दी । मानव-प्रेम और अहिंसा की नीति अपनाई । धौली के अशोकीय

शिलालेख उसका बयान करते हैं । पहाड़ी पर जापानियों के हाथों बना नया बैद्धस्तूप उस गौरवशाली घटना की उद्‍घोषणा करता है । वीरत्व की यह कहानी आगे बढ़ती है । कलिंग सम्राट खारबेल मगध पर आक्रमण कर देते हैं । उसे पराजित करके 'कलिंग जिन' को वापस ले आते हैं । खण्डगिरि - उदयगिरि के शिलालेख और गुफाएँ खारबेल का यशोगान करती हैं । कलिंग के शौर्य की यह अमर कथा है ।

साहसिकता का यह सिलसिला आधुनिक युग में फिर दिखाई देता है । बक्सि जगबन्धु, सुरेन्द्र साय, चाखि खुण्टिया, चक्रधर बिसोई, लक्ष्मण नायक जैसे साहसी कलिंग के सपूतों ने अंग्रेजों को भी चैन की सांस नहीं लेने दिया था । इन लोगों ने प्राण दे दिये, मगर अन्याय नहीं सहा ।

इतिहास का अब दूसरा पन्ना देखें । उत्कृष्ट कलाओं का देश उत्कल । सदियाँ बीत गई । मगर भुवनेश्वर, पुरी और कोणार्क के बड़े-बड़े मंदिर आज भी सिर उठाये खड़े हैं । दुनिया के ये अजूबे हैं । भव्य और विशाल स्थापत्य अनेक छोटे-बड़े मंदिर ! हजारों नारी मूर्तियाँ । विभिन्न चेष्टाओं और भंगिमाओं से मुग्ध करनेवाली । हाथी, घोड़े, पहिये, कमल, रथाकार मंदिर ! विशाल और मनोहर ! नृत्य-गान के माहौल ! द्वारपाल, दिक्‌पालों के पौरुष । ये सब देशी-विदेशी पर्यटकों के लिए जादू के नमूने हैं । ओड़िशा के सूती और पाट के वस्त्र, सोने-चाँदी के गहने, काँसे-पीतल के बर्तन, सींग की कलाकृतियाँ विदेशी बाजार के आकर्षण रही हैं । ओड़िशी चित्रकला, नृत्य और संगीत आज विदेशों में अत्यंत लोकप्रिय हैं । ओड़िआ साधव (बनिये) छोटे-बड़े नावों में सुदूर पूर्वी द्वीपों में व्यापार का जाल फैलाये हुए थे । महासमुद्र की तरंगमालाओं में नाच-नाच कर जाते और धनरत्नों से नौकाएँ भर भर कर घर लौटते थे । न तूफान से डरते थे न गहरे सागर से । वे कहते थे – 'आ का मा भै'! हमें किसीका डर नहीं । चिलिका झील तो उत्कल-लक्ष्मी की विलास सरोवर रही । लेकिन दीपक जलता है तो बुझता भी है । ओड़िशा के ऐसे, शैर्य, ऐश्वर्य, और वैभव सब

काल के गर्भ में विलीन हो गए । ओड़िशा का सारा कार्यकलाप इतिहास बन गया । उसका पतन हो गया ।

बीसवीं शती के आंरभ में महापुरुष मधुसूदन ने इस इतिहास को पढ़ा । उनका दिल भर आया । उन्होंने सोते को जगाया । बोले – 'है उत्कल के सपूतो ! उठो, जागो ! अपने पुराने गौरव को याद करो ! तुम्हारे पूर्वजों ने गांगा से गोदावरी तक अपना राज्य फैलाया था । वह टूट-बिखर गया । ''गजपति गौड़ेश्वर नव कोटि कर्णाट कलर्वर्गेश्वर'' की उपाधि झूठी हो गई । तुम दाने दाने के मोहताज हो गए । अब तो उठो ! करो या मरो ।''

ओड़िशावासियों ने यह पुकार सुनी । अप्रैल १९३६ को स्वतंत्र ओड़िशा प्रदेश बना । अनेक सुधी नेता काम में जुट गए । नवनिर्माण का बीड़ा उठाया । उत्कल विश्वविद्यालय स्थापित हुआ । अनेक स्कूल-कॉलेज खुले । नई और तकनीकी शिक्षा का इंतजाम हुआ । इंजीनियरिंग और मेडिकल कॉलेज खुले । कुछ ही वर्षों में हजारों अमले-ऑफिसर, शिक्षक-अध्यापक, इंजीनियर और डॉक्टर तैयार हो गए । इन योग्य व्यक्तियों ने अपने तथा बाहर के प्रांतों में काम करके नाम कमाया । हीराकुद बाँध बना । खेतों की सिंचाई हुई । अनाज का पैदावार बढ़ा । राउरकेला से लोहे का उत्पादन होने लगा । सुनाबेड़ा में हवाई जहाज बनने लगे । परादीप बंदरगाह ने नौवाणिज्य को बढ़ावा दिया । इमफा, नालको, जिन्दल और वेदान्त जैसे बड़ी-बड़ी कंपनियों ने धातु-द्रव्यों का उत्पादन किया । चाँदीपुर और बडमाल में देश के लिए आधुनिक रक्षा-सामग्री बनने लगी । आजकाल तो ओड़िशा में ही सारी आधुनिक सुविधाएँ मिलने लगी हैं ।

सदियों बाद फिर ओड़िशा की किस्मत पलटी है । वह प्रगति के रास्ते पर आया है । दूसरे राज्यों के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहा है । देश की प्रगति में भी उसका योगदान बढ़ा है । यह उसके उत्थान के लक्षण हैं । हम सबको इससे लाभ उठाना चाहिए । नये उद्यमों में भागेदारी होनी चाहिए । तब ओड़िशा का नया इतिहास बन सकेगा ।

●

शब्दार्थ :

निराला – विचित्र, स्थावर – स्थिर रहनेवाले, जंगम – चलने-फिरनेवाले, जड़ – लकड़ी पत्थर जैसी वस्तुएँ, चेतन – जीव, सुहावना – सुखकर, फकीरी – गरीबी, खुशहाली – सुख का वक्त, बदहाली – बुरा समय, गम – दु:ख, पन्ना – पृष्ठ, सिलसिला – कड़ी, अजूबा – आश्चर्य-वस्तु, झील – बड़ा जलाशय, शौर्य – वीरत्व, आखिरकार – अंत में, सपूत – सुपुत्र ।

अर्थ विस्तार :

हंसका विवेक – गुणको ग्रहण करना और दोष को छोड़ना

चार...रात – कुछ दिन सुख के फिर दु:ख । यह कहावत है ।

दिल दहलना – डर जाना

कलिंग जिन – वह मूल्यवान वस्तु जो मगध से लायी गयी थी ।

आ का मा भै – ओड़िशा के बनिये समुंदर में बोहित छोड़ते वक्त यह नारा देते हैं ।

विलास सरोवर – लक्ष्मीजी के विलास का जलाशय अर्थात् चिलिका व्यापार का केन्द्र था, जहाँ धनरत्न आते थे ।

प्रश्न और अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(क) इस दुनिया को विचित्रा क्यों कहा जाएगा ?

(ख) दुनिया बदलती है, इसके क्या प्रमाण हैं ?

(ग) कलिंगा: साहसिका: – ऐसा क्यों कहा गया है ?

(घ) धर्माशोक ने क्या किया ?

(ङ) वीरत्व की कहानी आगे कैसे बढ़ी ?

(च) धउली के शिलालेख में क्या लिखा है ?

(छ) ‘उत्कल’ का क्या अर्थ है ?

(ज) ओड़िशा के मंदिर अजूबे क्यों हैं ?

(झ) ओड़िशा के बनिये क्या करते थे ?

(ञ) मधुसूदन ने क्या किया ?

(ट) मधुबाबू की पुकार सुनकर क्या हुआ ?

(ठ) ओड़िशा ने कैसे प्रगति की ?

(ड) ओड़िशा आज पीछे नहीं है, क्या प्रमाण है ?

(ढ) आजकल क्या-क्या नए उद्योग हो रहे हैं ?

2. इन प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

(क) संसार निराला क्यों है ?

(ख) संसार बदलता है, इसके क्या प्रमाण हैं ?

(ग) आदमी के जीवन का क्या इतिहास है ?

(घ) कलिंग की ख्याति क्यों बढी ?

(ङ) धउली के शिलालेख क्या कहते हैं ?

(च) बक्सि जगबंधु आदि ने क्या किया ?

(छ) कौन-सी मूर्तियाँ दुर्लभ हैं ?

(ज) चिलिका की क्या खासियत है ?

(झ) मधुसूदन ने क्या किया ?

(ञ) ओड़िशावासियों ने मधुसूदन की पुकार सुनकर क्या-क्या किया ?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए ।

(क) नीर क्षीर का विवेक किसके पास है ?

(ख) आज सुहाना मौसम है तो कल कैसा हो जाता है ?

(ग) आदमी के जीवन का इतिहास क्या है ?

(घ) प्रदेश के इतिहास में क्या-क्या होता है ?

(ङ) कलिंगवासी किसके नेतृत्व में लड़े ?

(च) अशोक ने कौन सी नीति अपनाई ।

(छ) खण्डगिरी की गुफाएँ किसका यशोगान करती हैं ?

(ज) विदेशी पर्यटकों के लिए ये मंदिर कैसे हैं ?

(झ) यहाँ के साधव (बनिये) नौकाओं में क्या भर-भर कर लौटते थे ?

(ञ) स्वतन्त्र ओड़िशा प्रदेश कब बना ?

(ट) देश के लिए आधुनिक रक्षा सामग्रियाँ कहाँ बनने लगीं ?

(ठ) लोहे का उत्पादन कहाँ होने लगा ?

भाषा-ज्ञान

1. इन मुहावरों के अर्थ समझिए :

दाँत खट्टे करना

दिल दहलना

जान की बाजी लगाना

धावा बोलना

दिल भर आना

दाने दाने का मोहताज

बीड़ा उठाना

2. ऐसे शब्द बनाइए :

सिंचाई, चढ़ाई, खिंचाई, बड़ाई, कमाई

3. विलोम शब्द लिखिए :

स्थावर	___________	जड़	___________	गुण	___________
सर्दी	___________	खुशी	___________	सुख	___________
अँधेरा	___________	खुशहाली	___________	उत्थान	___________
बढ़िया	___________	वीर	___________	युद्ध	___________
अहिंसा	___________	सजीव	___________	बड़ा	___________

4. पर्यायवाची शब्द जानिये :

आदमी	–	मनुष्य, मानव	मौसम	–	ऋतु
प्राण	–	जान	पन्ना	–	पृष्ठ
युद्ध	–	लड़ाई, जंग	अमूल्य	–	अनमोल, बहुमूल्य
जरिये	–	माध्यम से	द्वीप	–	टापू
प्रांत	–	प्रदेश, राज्य	पेशा	–	धंधा, जीविका, काम
नाव	–	नौका, नैया	किस्मत	–	भाग्य, तकदीर

5. निम्न शब्दों के लिंग बताइए :

संसार, पहाड़, नदी, पौधा, पक्षी, विवेक, दूध, पानी, गर्मी, सर्दी, फसल, अनाज, दु:ख, दर्द, सूखा, अकाल, खुशहाली, चाँदनी, खुशी, नम, अमीरी, गरीबी, जीवन, जिन्दगी, सुहाना, अँधेरी, रात, दिन, मुकाबला, पन्ना, प्राण, जान, दीपक, इतिहास, सामाज्य, आजादी, बिजली, कारखाना, शिक्षा, नाम

6. निम्न शब्दों के वचन बदलिए :

नदियाँ, झरने, पौधे, पन्ने, बड़े, मुकाबला, जान, धारा, हाथी, घोड़ा, मूर्तियाँ, सुई, वस्तु, नाव, जहाज, दाना, बहन, भाई, देशवासी, सुविधा, कंपनी, चुनौती

7. कोष्ठक में से सही क्रियापद चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए :

(क) कलकल करके नदियाँ ——— ।

(बह रहा है, बहती हैं, खड़ी हैं, चलती हैं)

(ख) हंस ने दूध ——— ।

(पिया, पी, पी लिये, पीएगा)

(ग) कलिंगवासियों ने जानें ——— पर जमीन नहीं ——— ।

(दी, दी, दिया, दिये)

(घ) अशोक ने युद्ध छोड़ शांति की नीति ——— ।

(अपनाया, अपनायी, अपनाये, अपनायी)

(ङ) लोगों ने प्राण ——— ।

(दिये, दिया, दी, दीं)

(च) मधुसूदन ने इतिहास ——— ।

(पढ़ा, पढ़े, पढ़ी, पढ़ीं)

(छ) अशोक ने वीरत्व की कहानी ——— ।

(सुना, सुनी, सुनीं, सुने)

(ज) पूर्वजों ने साम्राज्य ——— ।

(बनाया, बनाये)

8. पाठ में से ऐसे वाक्यांश ढूँढ निकालिए :

अच्छी शिक्षा मिली ।

इस्पात कारखाना बसा ।

प्रगति में तेजी आयी ।

9. पाठ में से कुछ क्रिया पदों को छाँटकर उनके तीनों कारणों के रूप लिखिए ।

10. पाठ में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँटिए ।

11. इन क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए :

डरना, बहना, पढ़ना, बनना, करना, मानना

12. ऐसे शब्द बनाइए :

सुहावना – ______________

गौरवशाली – ______________

तरंगमाला – ______________

जिजीविषा – ______________

◆ ❖ ◆